इकाई – 5

राजस्थानी लोकनाट्य विविध रूप

ख्याल

राजस्थानी लोकनाटकों की समस्त विधाओं में 'नाट्य' विधा के सर्वाधिक निकट 'ख्याल' है। यह सत्य है कि लोक साहित्य किसी एक व्यक्ति, स्थान और काल की धरोहर नहीं होता। यह किसी व्यक्ति की वैयक्तिक प्रज्ञा का प्रमाण नहीं है फिर भी 'ख्याल' इसलिए लोकनाटकों की एक विधा स्वीकार करली गई है क्योंकि उसमें लोकमानस की बहुत गहराई तक अभिव्यंजना प्राप्त होती है। ख्यालों का प्रारम्भ भी मंगलाचरण, गुरुमहिमा तथा दुर्जनों के स्मरण से होता है।

मंगलाचरण — 'थांने मनाऊं गौरी शारदा दयो बुद्धि ईश्वरी।
गजानंद गुरुदेव मनाऊं धर चरणां में ध्यान।'

गुरुवंदना — 'गुरु देवन का देव है सरै, धरौ उसी का ध्यान।
आप तिरै अरु शिष्य तिरावै, गावे वेद पुरान॥

दुर्जन निंदा — 'लुच्चे लम्पट और कुकर्मी अथवा हुल्लड़ बाज।
चोर चकोर चुगलै निंदक, जाय सभा से भाज॥
झूठी चुगली करै खेल की, व्यर्थ दिखावे नाज।
उनकी कुमति हरो शारदै। गौरी पति गणराज॥'

इन ख्यालों में राजस्थानी लोक संस्कृति, धर्म, दर्शन, पुराण, इतिहास और समाज की सम्पूर्ण सुन्दरता और विद्रुपताओं का सजीव चित्रण प्राप्त होता है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इन ख्यालों का

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित रूप में वर्गीकरण किया जा सकता है—

(1) पौराणिक तथा धार्मिक चरित्र प्रधान :— इन ख्यालों की कथावस्तु का सम्बंध पौराणिक देवी-देवता, लोक देवी-देवता, योगी, साधु, सन्त तथा सती नारियों के प्रेरणादायक जीवन प्रसंगों पर केन्द्रित रहता है। श्री विष्णु लक्ष्मी, शिव पार्वती, हरिश्चन्द्र, राजा मोरध्वज, भक्त प्रहलाद, भक्त ध्रुव, भक्त पूरणमल, भरथरी आदि की जीवन-लीलाओं से इन ख्यालों की सम्प्रेषणीयता बहुत प्रभावी बन जाती है। इसी प्रकार लोक देवता रामदेव जी, पाबूजी, तेजाजी, गोगा चौहान, सील माता आदि के जीवन-चरित्र से लोक-समाज अपनी अत्यधिक निकटता अनुभव करता है। इन लोकनायकों में भक्ति, योग, तपस्या, दान, सत्य बोलना, शरणागत धर्म का पालन, वचन पालन के लिए प्राणोत्सर्ग, कर्म फल, पुनर्जन्म आदि का संदेश लोक जीवन के लिए प्रेरणास्पद बन जाते हैं।

(2) ऐतिहासिक चरित्रमूलक ख्याल :— लोकजीवन उन ऐतिहासिक पुरुषों के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं जिन्होंने क्षात्र धर्म की परम्पराओं का निर्वाह करते हुए अपने प्राणोत्सर्ग करने में संकोच तक नहीं किया। प्राचीन ऐतिहासिक चरित्रों में न्यायप्रिय विक्रमादित्य, जगदेव पंवार तथा मध्यकालीन राजाओं में नागौर के अमरसिंह राठौड़ के पराक्रम को केन्द्र में रखकर अनेक ख्यालों की रचना हुई। राजपूती आन-बान और शान के साथ-2 स्वाभिमान

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

की रक्षा को व्यंजित करना इन ख्यालों का मुख्य प्रयोजन रहता है—

"रण चढ़िया रजपूत रूके ना मुख पर बरसे नूर।
सके नहीं रजपूत रण में जो शिर चढ़कर आय॥"
"सिंह लड़े जो एकलो भेड़ा बीस हजार।
भेड़ा बीस हजार मांगा हार ढ़र।
है केहर की ललकार के चकनाचूर है॥"

3. साहसी एवं रोमांचक चरित्र प्रधान :— इन ख्यालों के नायक प्रायः डाकू, लुटेरे, धाड़ायती बनाये गये हैं, लेकिन लोकसमाज में इनकी प्रतिष्ठा भय और आतंक, क्रूरता तथा अत्याचारी की न होकर लोकोपकारक तथा सहायक की है। वे धनवानों को ही नहीं बल्कि शोषणकर्त्ता ठाकुर, जमींदार, सेठ साहूकार तथा अंग्रेजों की हवेलियों तक लूट लेते हैं। यह हिम्मत ही इनको लोकनायकत्व प्रदान कर देती है। डूंगजी जुहार जी ने ब्रिटिश शासकों तक को आतंकित कर दिया था। इन चरित्र नायकों का जीवनदर्शन कहता है—

(1) "दुरबल दीन अनाथ कोस में नई दुखावां पेट।
बड़ा बड़ा वेपारी लुट्या और लखपति सेठ॥
(2) झूठा वचन कदयूं न बोलां सांचा हरि का प्यारा।
बिसवास दगो कर मारे जिसका धरक अमारा॥
(3) डुंगरसिंघ जुहार सिंघ ये गरीब की ढाल।"

4. प्रणयमूलक ख्याल :— इन ख्यालों के नायक-नायिकाओं

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

की दो श्रेणियाँ हैं। प्रथम श्रेणी के प्रेमी युगल राजवंश से सम्बन्धित हैं जिनमें जलाल- बूबना, निहालदे सुल्तान, सोर बनजारा, राजा केसरसिंह फूलादे, हीर - रांझा, कवि सुन्दर विद्यावती, आभलखींव जी के चारित्र प्रमुख हैं। दूसरी श्रेणी में सामान्य नायक नायिका हैं जिनमें सेठ- सेठानी, देवर- भोजाई, काळी- जेठूता, वैद्य, आदि प्रमुख हैं। इनमें सामाजिक सम्बन्धों के अनेक प्रिय अप्रिय, नैतिक अनैतिक तथा आत्मिक दैहिक प्रणय की झलक देखी जा सकती है। इनमें प्रिय की प्राप्ति के लिए अपार कष्ट तथा लोकप्रवाद को सहना, प्राणोत्सर्ग तक करने के लिए तत्पर रहना तथा कुल की मर्यादा का त्याग आदि भाव प्रदर्शित होते हैं। इनमें श्रृंगार और सौंदर्य, संयोग और वियोग, प्रकृति आदि का प्रभावशाली अंकन प्राप्त होता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

' घर आवो मदहकिया थारी धण ऊभी बाट निहारती
जेठ मास जीव लगे न मेरो गरमी पड़त विशेष।
ताती पून तेज जोबन को काया कहे हमेस ।।
साढ़ समे बरखा की कोयल बोले इम्रत वाणी ।।
गरजे इन्द्र नींद नहिं आवे पीव बिन भई दिवानी।'

5.) सामाजिक ख्याल :— राजस्थानी लोकनाट्यों की समृद्ध परम्परा में "ऐसे ख्याल भी उपलब्ध हैं, जिनमें समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं अन्य सामाजिक विकृतियों की ओर जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट कर उन्हें सचेत किया गया है। इन ख्यालों का

Scanned with CamScanner

GARG
Date
Page

मुख्य उद्देश्य विश्रृंखलित एवं पथभ्रष्ट समाज का कुत्सित चित्र प्रस्तुत करना रहा है।" ऐसे ख्यालों में राजस्थानी लोकसमाज में व्याप्त कुप्रथाएँ, पर्दा प्रथा, बहुविवाह, बाल विवाह, अनमेल विवाह, अनैतिक आचरण यथा परस्त्रीगमन, सट्टा, जुआ, दुर्व्यसन यथा मद्यपान, भांग, अफीम, गाँजा, चरस तथा धन लोभी सेठों की पीड़ित पत्नि-व्यथा भी केन्द्र में रहती है। सोलह वर्षीय सुगना कहती है —

"मांय बाप हत्यारा लोभी दया नहीं घर में आई।
लेकर तीस हजार रुपैया बूढे के संग परणाई।
नाई ब्राह्मण भी खुदगर्जी पंच जात के अन्याई,
गले छुरी मेरे जद चाली खूब मिठाई सब खाई।।"

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि इन ख्यालों में राजस्थानी धर्म, दर्शन, संस्कृति तथा लोकजीवन की सरस झांकी अभिव्यक्त हुई है। इनमें संगीत एवम् नृत्य की प्रधानता है। राग-रागिनियाँ एवं छंदविधान की रमणीयता है। तिलाणी, लावणी, कवित्त, गजल, दोहा, शेर के साथ सोरठ, मांड, टोडी, भोपाली, प्रभाती, सारंग आदि रागों की मनोहरता अनुभव की जा सकती है। नगाड़े, ढोल, ढोलक, झांझ, हारमोनियम, शहनाई, खड़ताल, डप, चंग आदि प्रमुख वाद्य यन्त्रों के द्वारा ख्यालों की प्रस्तुति प्रभावी बन जाती है।

REDMI NOTE 5 PRO
Scanned with CamScanner

नौटंकी

नौटंकी के उद्भव का इतिहास सामान्यतः मुगलकाल से माना जाता है। इसकी मंचव्यवस्था स्थायी नहीं होती बल्कि स्थानभेद के अनुसार बदलती रहती है। इसमें प्रायः पुरुष ही नारी पात्रों की भूमिका का निर्वाह करते हैं। इसे एक प्रकार से ओपन एयर थियेटर की संज्ञा दी जा सकती है। प्रायः नौटंकी में प्रस्तुत होने वाली कथावस्तु के विषय पौराणिक या श्रृंगारपरक होते हैं। गोपीचंद, हकीकतराम, पूरनभगत, रूपबसन्त आदि अत्यधिक लोकप्रिय नायक हैं। नौटंकी के प्रति ग्रामीण जनता में विशेष चाव व उत्साह रहता है। जब सिनेमा व टी॰ वी॰ का चलन नहीं था तब नौटंकी ही ग्राम-मनोरंजन, मनबहलाव व प्रेरणा का स्त्रोत होती थी।

नौटंकी की मंचसज्जा पर एक ओर गायक, वादक तथा उस्ताद के बैठने का स्थान रहता है तो नेपथ्य में अभिनेताओं का श्रृंगारकक्ष होता है। स्त्री पात्रों की भूमिका पुरुष ही निभाते हैं। यदा कदा स्त्रियाँ अथवा वेश्याएँ भी अभिनय करते देखी गई हैं। प्रायः नौटंकी कार्तिक मार्गशीर्ष अथवा चैत्र-वैशाख माह की रात्रि में विभिन्न मेलों के अवसर पर आयोजित की जाती है। उत्तरप्रदेश में फर्रुखाबाद, कानपुर, मैनपुरी, मेरठ, सहारपुर की नौटंकियाँ आज भी प्रसिद्ध हैं।

नौटंकी में अभिनीत की जाने वाली कथावस्तु की गंभीरता के मध्य हास-परिहास को भी योजना

Scanned with CamScanner

की जाती है। इस प्रस्तुति में तबले की ताल और नगाड़ों पर डंकों की चोटों का नादसौन्दर्य अपूर्व रूप से प्रभावशाली होता है। इसी के साथ संवाद, अभिनय एवं नृत्य के माध्यम से कथा की गति में क्षिप्रता आती जाती है। संवादों में गूढ़ के साथ-2 पद्य का भी प्रयोग होता है। संवादों की योजना प्रश्नोत्तरी में होती है। नौटंकी रात्रि पर्यन्त चलती रहती है जिसका समापन प्रायः प्रातःकाल तक होता है।

× × ×

स्वांग

डॉ. सोमनाथ गुप्त 'स्वांग' को परिभाषित करते हुए लिखते हैं — "मध्यकाल में प्रचलित आमोद-प्रमोद के साधनों में 'सांग' या 'स्वांग' का विशेष स्थान है। जनता में किसी बात को प्रभावोत्पादक ढंग से कहने सुनने के लिए अनुकरण - स्वांग को अपनाया जाता है। इस प्रकार इसमें किसी व्यक्ति अथवा घटना का उद्घाटन ही नहीं होता बल्कि ऐसा करते हुए आदमी दूसरों का पर्याप्त मनोरंजन भी करता है। स्वांग गाँवों में बड़ा लोकप्रिय है। स्वांग अनुकरण (नकल) का ही परिवर्तित-परिवर्द्धित रूप है किन्तु नकल प्रायः हास्य विषय को लेकर की जाती है जबकि स्वांग की परिधि में आने वाले विषय हैं — धार्मिक (मोरध्वज, तुलसी, हरीश्चन्द्र), ऐतिहासिक अथवा सामाजिक (प्रताप, शिवाजी, दयाराम, रघुवीरसिंह), स्वांगों में राष्ट्रीय अथवा स्थानीय चरित्रों का चित्रण हुआ करता है।"

Scanned with CamScanner

GARG
Date
Page

'साँग' या स्वाँग प्राय शृंगार, करुण, वीर तथा हास्य रस की धारा में प्रवाहित होते हैं। खड़ी बोली के स्वाँगों को हम दो रूपों में वर्गीकृत कर सकते हैं — हाथरस, एटा जिलों में उसका पूर्वी रूप है तथा हरियाणा के रोहतक तक इसका पश्चिमी रूप प्रचलित है। सराहनपुर जिले में देवचन्द्र अपने स्वाँग के लिए विख्यात रहा है। होली के अवसर पर हर बार नया स्वाँग लिखा तथा खेला जाता था।

'स्वाँग' का प्रारम्भ सरस्वती वंदना से होता है। इसमें दोहा, कुण्डलिया, चौबोला के अन्तर्गत छोटी और लम्बी तान का प्रयोग होता है।

× × ×

रम्मत

होली के अवसर पर जितने प्रकार के लोकानुरंजन राजस्थान में प्रचलित हैं उनमें 'रम्मत' का अपना विशेष स्थान है। यद्यपि यह 'रम्मत' जैसलमेर, फलौदी तथा बीकानेर में मुख्य रूप से आयोजित होती है फिर भी इस श्रेणी के लोकनाट्यों में 'रावलों की रम्मत' विशेष रूप से ख्याति प्राप्त है। रावल जाति मुख्य रूप से बिरवाई तथा चुंदड़ा गाँवों में रहती है। इस जाति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी 'रम्मत' यजमान चारणों के गाँव में ही 'माँडते' हैं। राजस्थान के लोकसमाज में 'रम्मत' खेल, क्रीड़ा, खिलौना आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसलमेर में यह शब्द

Scanned with CamScanner

GARG Date Page

'रम्मत' 'रंमत', तथा बीकानेर में 'रम्मत' बोला जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह शब्द संस्कृत के 'रमण' शब्द का अपभ्रंश रूप है।

'रम्मत' की मंचयोजना भी ख्यालों के मंच के अनुरूप ही होती है। जैसलमेर में जुहारमल के अखाड़े में करीब एक माह तक 'रम्मत' के भागीदारों को प्रशिक्षण दिया जाता था। मुख्य अभिनेता उच्च वर्ग का ही होता है। शेष पात्रों के लिए किसी प्रकार का कोई जातिगत भेदभाव नहीं है। इसके मंचन में मेघवाल, चूड़ीगर, दरोगा, मुसलमान, नाई आदि सभी वर्ग के लोग भागीदार हो सकते हैं। रम्मत की मूल ऊर्जा तो 'टेरिये' होते हैं। इन 'टेरियों' का ऊर्जस्वी कंठ 'रम्मत' को अत्यन्त ही प्रभावशाली बना कर इतना सम्मोहित कर देता था कि दर्शक रात भर उसे देखते हुए अपनी नौकरी तक को भूल जाते थे। 'रम्मत' की मंचयोजना खुले मोहल्ला या मंडी (बाजार के चौक) में होती है। बड़े-बड़े लकड़ी के पाट बिछा कर उसी पर राजा-रानी के लिए बैठने के लिए छतरी की आकृति का एक सिंहासन बनाया जाता है। मुख्य मंच के चारों ओर दरियां बिछा दी जाती हैं। इसके चारों ओर दर्शक बैठते हैं। मुख्य मंच को फरियों, झण्डियों तथा फूल-पत्तियों से सजाया जाता है। ऊंचे मंच पर वादक और उनके वाद्य तबला, झांझ, चिमटा, तंदूरा, ढोलक, हारमोनियम आदि लेकर एक कोने में बैठते हैं। टेरिये बोल के साथ गाते हैं तब पात्र नाचते हुए अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। रम्मत की भव्य

GARG
Date
Page

सफलता में इन टेरियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।
मंच पर सिंहासन के पीछे किसी भी देवी-देवता का अंकित पर्दा लगा रहता है। नाई प्रकाश के लिए मशाल हाथ में रखता है। जैसलमेर की रम्मतों के लिए श्री स्वातमल शर्मा, सुगनलाल व्यास, तेजकवि, अजीतसिंह मेहता, रूपराम पुरोहित आदि कुशल अभिनेता थे। बीकानेर की रम्मतें जिस जाति के मोहल्ले में होती हैं, उसी के नाम पर रम्मत जानी जाती है। रांगड़ी चौक, बिस्सों का चौक, आचार्यों का चौक, भादाणियों का चौक, हर्षों का चौक आदि प्रसिद्ध रम्मत केन्द्र रहे हैं। आचार्यों की चौक की अमरसिंह राठौड़ की रम्मत, बिस्सों की चौक की चौबेल नौटंकी की रम्मत, कीकाणी व्यासों के चौक की जमनादास जी की रम्मत प्रसिद्ध हैं। इन रम्मतों में जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

× × ×

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner